3 शिवानी

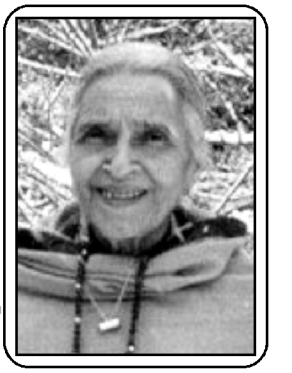

व्यक्तित्व

शिवानी का जन्म राजकोट (सौराष्ट्र : गुजरात) में 17 अक्टूबर, सन् 1924 ई० को विजयादशमी के दिन हुआ था। शान्ति निकेतन और कलकत्ता विश्वविद्यालय में आपने शिक्षा पायी। पर्वतीय समाज से आपकी सम्बद्धता रही है। आप लोकप्रिय लेखिका रहीं। आपकी कहानियाँ प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। शिवानी ने 79 वर्ष की उम्र में 21रमार्च, सन् 2003 ई० को इस दुनिया से सांसारिक नाता तोड़ लिया।

कृतित्व

शिवानी ने कहानियाँ, उपन्यास और संस्मरण लिखे हैं। प्रकाशित कथा-संग्रह हैं— **'विषकन्या'**, **'करिये छिमा'**, **'लाल हवेली'**, **'अपराधिनी'**, **'पुष्पहार'** तथा **'चार दिन'**। **'चौदह फेरे'**, **'श्मशान चम्पा'**, **'कैजा'**, **'भैरवी'**, **'कृष्णकली'**, **'मायापुरी'** **'सुरंगमा'** आदि उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।

कथा-शिल्प एवं भाषा-शैली

शिवानी की कहानियों में अधिकतम पर्वतीय समाज से सम्बन्धित समस्याओं, प्रथाओं और मनोभावों का चित्रण किया गया है। आपने भावात्मक और सामाजिक-आर्थिक समस्याओं से जूझती-टकराती नारी को बड़े रोचक और मार्मिक रूप में चित्रित किया है। अधिकतम कहानियों के कथानक आपके निजी अनुभवों पर आधारित हैं। आपकी कहानियों में कथा का ताना-बाना या तो किसी घटना को केन्द्र में रखकर बुना गया है या फिर किसी चरित्र को। घटना-प्रधान कहानियों में कुतूहल और चमत्कार की विशेषता देखने को मिलती है। चरित्र-प्रधान कहानियाँ प्रायः किसी गम्भीर सामाजिक अथवा मानसिक समस्या का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती हैं। कहानियों के चरित्र प्रायः उच्चवर्गीय हैं। नारी और पुरुष दोनों के ही जीवन्त शब्दचित्र उभारने में आप कुशल रहीं। **'लाल हवेली'**, **'करिये छिमा'**, **'के'**, **'चीलगाड़ी'**, **'मधुयामिनी'** आदि आपकी श्रेष्ठ कहानियाँ हैं। बँगला कथा-शैली का आप पर व्यापक प्रभाव पड़ा है।

कहानियों की भाषा तत्सम-प्रधान है, जिसमें कथावस्तु के अनुरूप आंचलिक शब्दावली, मुहावरों, लोकोक्तियों और काव्य-पंक्तियों का सुरुचिपूर्ण प्रयोग मिलता है। शब्द-रचना कोमल तथा मोहक है। कवित्वपूर्ण चित्रण और सटीक उपमाओं के कारण आपकी कहानियों का एक विशिष्ट वातावरण है, जिसका सम्मोहन कथा के अन्त तक पाठक पर छाया रहता है। यह लालित्य और कवित्वपूर्ण सम्मोहन ही शिवानी की निजी विशेषता थी, जो उन्हें अन्य कथाकारों से अलग करती है। आपकी कहानियों की एक विशेषता उनकी व्यंग्यशीलता भी है। बड़े सधे और शालीन ढंग से आपने सामाजिक रूढ़ियों, विडम्बनाओं और बाह्याडम्बरों पर व्यंग्य किया है। इस व्यंग्य में हास्य और विनोद का भी सुखद पुट देखने को मिलता है।

लाटी

लम्बे देवदारों का झुरमुट झुक-झुककर गोठिया सैनेटोरिया की बलैया-सी ले रहा था। काँच की खिड़कियों पर सूरज की आड़ी-तिरछी किरणें मरीजों के क्लांत चेहरों पर पड़कर उन्हें उठा देती थी। मौत की नगरी के मुसाफिरों के रोग जीर्ण पीले चेहरे सुबह की मीठी धूप में क्षणभर को खिल उठते। आज टी. बी., सिरदर्द और जुकाम-खाँसी की तरह आसानी से जीती जाने वाली बीमारी है, पर आज से कोई बीस साल पहले टी. बी. मृत्यु का जीवन्त आह्वान थी। भुवाली से भी अधिक माँग तब गोठिया सैनेटोरियम की थी। काठगोदाम से कुछ ही मील दूर एक ऊँचे पहाड़ पर गोठिया सैनेटोरियम के लाल-लाल छतों के बँगले छोटे-छोटे गुलदस्ते से सजे थे।

तीन नम्बर के बँगले का दुगुना किराया देकर कप्तान जोशी स्वयं अपनी रोगिणी पत्नी के साथ रहता था। बँगले के बरामदे में पत्नी के पलँग के पास वह दिनभर आराम-कुर्सी डाले बैठा रहता, कभी अपने हाथों से टेम्परेचर चार्ट भरता और कभी समय देखकर दवाइयाँ देता। पास के बगल के मरीजों की बड़ी तृष्णा और चाव से सेवा करता था कप्तान जोशी! कभी उसके आनन्द चेहरे पर झुँझलाहट या खीझ की अस्पष्ट रेखा भी नहीं उभरती। कभी वह घुँघराले बालों को ब्रुश से सँवारता, बड़े ही मीठे स्वर में पहाड़ी झोड़े गाता, जिनकी मिठास में तिब्बती बकरियों के गले में बँधी, बजती-रुनकती घण्टियों की-सी छुनक रहती। पहाड़ी मरीज बिस्तरों से पुकार कर कहते, "वाह कप्तान साहब, एक और।" कप्तान अपने पलँग से घुली-मिली सुन्दरी 'बानो' की ओर देख बड़े लाड़ से मुस्करा देता। बानो का गोरा चेहरा बीमारी से एकदम पीला पड़ गया था और उसकी बड़ी-बड़ी आँखें और भी बड़ी-बड़ी हो गयी थीं। शान्त तरल दृष्टि से वह कप्तान को दिन-रात टुकुर-टुकुर देखती रहती। विवाह के दो वर्ष पश्चात् यही उनका वास्तविक हनीमून था, जहाँ न अम्मा, चाची और ताई की शासन की लगाम थी, न नयी बहू के घूँघट की बन्दिश। पिंजड़े की चिड़िया आजाद कर दी गयी थी किन्तु अब उसके कमजोर डैनों में उड़ने की ताकत नहीं थी। कप्तान उसकी दुर्बल तप्त हथेली को अपनी कसरती मुट्ठी में बड़े प्यार से दबाकर सहलाने लगता तो उसकी सींक-सी कलाई की सोने की चूड़ी सर-सर कर कोहनी तक सरक जाती।

उन दिनों गोठिया का डॉक्टर एक अधेड़ स्विस था। एक दिन उसने कप्तान को अकेले में बुलाकर कहा, "कप्तान, तुम अभी जवान हो, यह बीमारी जवानी की भूखी है। मैं देख रहा हूँ, तुम जरा भी परहेज नहीं बरतते। मरीज की भूख को दवा से जीतना होगा, मुहब्बत से नहीं।"

क्षणभर को सब समझकर कप्तान लाल पड़ गया। उसके बूढ़े पिता के भी कई पत्र आ चुके थे और माँ ने रो-रोकर चिट्ठियाँ डाल दी थीं, "मेरे दस-बीस पूत नहीं हैं बेटा, यह बीमारी सत्यानाशी है", पर कप्तान पहले की तरह अलमस्त डोलता, कभी बानो के चिकने केशों को चूमता, कभी उसकी रेशमी पलकों को, कभी पास के प्राइवेट वार्ड की, गुमानसिंह मालदार की गोल-मटोल पत्नी से मजाक करता।

सैनेटोरियम की मनहूस जिन्दगी के काले आकाश में रोबदार ठकुरानी ही एकमात्र द्युतिमान तारिका थीं। भरे-भरे हाथ-पैर की, चिकने चेहरे पर सदा मुस्कान बिखेरती वह परे सैनेटोरियम की भाभी थी। उसके स्वास्थ्य के दुर्गम दुर्ग में भी न जाने बीमारी का घुन किस अरक्षित छिद्र से प्रवेश पा गया था। टी०बी० लगने की पीड़ा से कराहती वह अपनी कदर्य गालियों का अक्षय भण्डार खोल देती। कभी लक्षपति श्वसुर को लक्ष्य बनाती, "हैं हमारे 'बुडज्यू' आधी कुमाऊँ के छत्रपति, पर बहू तिथांण (श्मशान) को जा रही है तो उनकी बला से! दुम उठाकर जिसे देखा, वही बदजात नर से मादा निकला" "ए शाब्बाश, क्या पंच के स्टैण्डर्ड का सेंस ऑफ ह्यूमर है! भाभी, तबीयत बाग-बाग कर दी।" कप्तान कहता। "एक मेरा खसम है साला। पी के धुत होगा किसी गोरी मेम को लेकर। दो महीने से हरामी झाँकने भी नहीं आया। दाढ़ीजारे की ठठरी उठेगी तो मजाल मैं भी सुहाग उतारूँ।" वह फिर कहती। "क्यों भाभी, क्यों कोस रही हो?" कप्तान हँसकर कहता।

प्रौढ़ा नेपाली भाभी की सदाबहार हँसी से खिलखिलाती आँखें छलक उठतीं, "शाबास है, कप्तान बेटा, तुझे देखकर मेरी छातियों में दूध उतर आता है। कैसी सेवा कर रहा है तू, और एक हमारे हैं कुतिया के जने! मिले तो मूँछें उखाड़कर हरामी के मुँह में ठूँस दूँ।"

कप्तान हँसते-हँसते दुहरा हो जाता, मूँछें उखाड़कर मुँह में ठूँसने की बात कुछ ऐसी जम जाती है कि वह भागकर बानो को सुना आता।

नेपाली भाभी के पति की असंख्य मोटरें अल्मोड़ा-नैनीताल को घेरे रहतीं, चाय के बगीचों का अन्त नहीं था किन्तु उनके वैभव ने पत्नी के प्रति प्रेम और मोह की बेड़ियाँ काट दी थीं। एक वर्ष से वे एक बार भी उसे देखने नहीं आये।

एक दिन कप्तान ने देखा, नेपाली भाभी की खाँसी बहुत ही बढ़ गयी है। खाँसी का दौरा-सा पड़ा और कप्तान भागकर देखने गया तो देखा, रक्त के कुण्ड के बीच नेपाली भाभी की विराट गेहुँआ देह निष्प्राण पड़ी थी। पति की मूँछों को उसके मुँह में ठूँसने के स्वप्न अधूरा ही छोड़कर भाभी चली गयी थी।

कुछ दिन तक कप्तान उदास हो गया। बानो की बड़ी-बड़ी आँखों में भी उदासी के डोरे पड़ गये। जब ऐसी हँसती-खेलती लाल-लाल भाभी को मौत खींच ले गयी तो हड्डियों का ढाँचा मात्र बानो तो हवा में उड़ती रुई का फाया थी। भाभी की मौत आकर जैसे उन दोनों के कान में कह गयी थी कि जिन्दगी कुछ ही पलों की है। उन अमूल्य पलों के अमृतस्वरूपी रस की अन्तिम बूँद भी उन दोनों को छोड़ना मंजूर न था। नित्य निकट आती मौत ने बानो को चिड़चिड़ा बना दिया पर जैसे इकलौते जिद्दी दुर्बल बालक की हर जिद् को स्नेहमयी माता हँस-खेलकर झेल लेती है, वैसे ही कप्तान हठीली बानो की हर जिद् पूरी करता। कभी वह खिली चाँदनी में बाहर जाने को मचलती तो वह अपने खाकी ओवरकोट में उसे लपेटकर अपनी देह से सटाये लम्बे चीड़ की छाया में बैठा रहता।

बानो से विवाह के ठीक तीसरे ही दिन छोड़कर उसे बसरा जाना पड़ा था। उन तीन दिनों में, खाकी वर्दी में कसे छह-फुटी शरीर और भूरी-भूरी मूँछों को देखकर, बानो उससे जितना ही कटी-कटी छिपी फिरती, वह उसे पाने को उतना ही उन्मत हो उठता। उसे देखते ही वह अपनी मेंहदी लगी नाजुक हथेलियों से लाज से गुलाबी चेहरा ढाँक लेती। दूसरे दिन बड़ी कठिनता से कप्तान उसके मुँह से धीमी फुसफुसाहट में उसका नाम कहलवा पाया था, बहुत धीमे स्वर में ही प्रणय-निवेदन की भूमिका बाँधनी पड़ी थी; क्योंकि पास के कमरे में ही ताऊजी लेटते थे।

"क्या नाम है तुम्हारा?" उसकी तीखी ठुड्डी उठाकर कप्तान ने पूछा था।

"बानो।" उसके पहले होंठ हिलकर रह गये।

"राम-राम, मुसलमानी नाम।" कप्तान ने हँसकर छेड़ दिया।

"सब यही कहते हैं, मैं क्या करूँ?" बानो की आँखें छलक उठीं।

"मैं तो तुम्हें छेड़ रहा था, कितना प्यारा नाम है! पहाड़ी नाम भी कोई नाम होते हैं भला, सरुली, परुली, रमा, खष्टी।" वह बोला, "कितने साल की हो तुम, बानो?"

"इस आषाढ़ में मुझे सोलहवाँ लगेगा।" बानो ऐसे उत्साह से बोली जैसे उसने आधी जिन्दगी पार कर ली हो। कप्तान का दिल भर आया, अपनी खिलौने-सी बहू को उसने खींचकर हृदय से लगा लिया। पहले वह अपने ताऊ और पिता से सख्त नाराज हो गया था, कहाँ वह ठसकेदार बाँका कप्तान और कहाँ हाईस्कूल पास छोकरी को पल्ले बाँधकर रख दिया! पर बालिका बानो की सरल आँखों का जादू उस पर चल गया। तीसरे दिन ही उसे बसरा जाना था। कप्तान बानो से विदा लेने गया तो वह कोने में बैठी छालियाँ कतर रही थी, उसकी पलकें भीगी थीं और पति की आहट पाकर उसने घुटनों में सिर डाल दिया। झट से झुककर कप्तान ने उसका माथा चूम लिया। उसका गला भर आया।

तीन दिन की ताजी सुन्दरी नववधू को इस तरह छोड़कर जाना कप्तान को दुश्मन की गोलाबारी से भी भयंकर लगा। उसके बाद दो वर्षों तक कप्तान युद्ध की विभीषिका में भटक गया। बर्मा और बसरा के जंगलों में भटक-भटककर उसके साथी बहशी बन गये थे। गन्दे अश्लील मजाक करते। फौजी अफसरों में कप्तान ही सबसे छोटी उम्र का था। बर्मा की युद्ध से स्तब्ध सड़कों पर चपल बर्मी रमणियों के कुटिल कटाक्षों का अभाव नहीं था, फिर भी कप्तान अपनी जवानी को दाँतों के बीच जीभ-सी बचाता सेंत गया।

दो साल बाद घर पहुँचा तो दुनिया बदल चुकी थी। उन दो वर्षों में बानो ने सात-सात ननदों के ताने सुने, भतीजों के कपड़े धोए, ससुर के होज बिने, पहाड़ की नुकीली छतों पर पाँच-पाँच सेर उड़द पीस कर बड़ियाँ तोड़ीं। कभी सुनती उसके पति को जापानियों ने कैद कर लिया है, अब वह कभी नहीं लौटेगा। सास और चचिया सास के व्यंग्य-बाण उसे छेद देते, वह घुलती गयी और एक दिन क्षय का तक्षक कुण्डली मारकर उसकी नन्हीं-सी छाती पर बैठ गया। उसे सैनेटोरियम भेज दिया गया था। दूसरे ही दिन कप्तान बानो को देखने चल दिया तो घरवालों के चेहरे लटक गये।

गोठिया पहुँचा और एक प्राइवेट वार्ड के बरामदे में लेटी बानो को देखकर उसका कलेजा उछलकर मुँह को आ गया। दो वर्षों में बानो घिसकर और भी बच्ची बन गयी थी। कप्तान को देखकर उसकी तरल आँखें खुली ही रह गयीं, फिर आँसू टपकने लगे। कहने और कैफियत देने की कोई गुंजाइश नहीं रही। बानो के बहते आँसुओं की धारा ने दो साल के सारे उलाहने सुना दिये। दोनों ने समझ लिया कि मिलन के वे क्षण मुट्ठी-भर ही रह गये थे।

उन दिनों सैनेटोरियम में एक अत्यन्त क्रूर नियम था। रोगियों को उनकी अन्तिम अवस्था जानकर उन्हें घर भेज दिया जाता। सैनेटोरियम की मृत्यु का प्रवेश सर्वथा निषिद्ध था। नेपाली भाभी की मृत्यु के बाद कप्तान और बानो मातम में डूब गये पर चौथे दिन वे फिर हनीमून मनाने लगे। अपनी साड़ियों का बाक्स निकलवा कर बानो ने कई साड़ियों पर इस्त्री करवायी। बड़ी देर तक दोनों ने पेशेन्स खेला, पर शाम होते ही बानो मुरझाने लगी। दिनभर उसे दस्त आ रहे थे और टी०बी० के मरीज को दस्त आना खतरे से खाली नहीं होता। डॉक्टर दलाल आया, उसने कप्तान को बाहर ले जाकर कमरा खाली करवाने का नोटिस दे दिया, "कल ही ले जाना होगा, आई गिव हर टू डु थ्री डेज। इससे ज्यादा नहीं बचेगी।"

कप्तान का चेहरा सफेद पड़ गया। घर जाने का प्रश्न नहीं उठता था, तीन रसभरे महीनों की मीठी धरोहर को वह घर की कड़वाहट से अछूता ही रखना चाहता था। भुवाली के पास ही एक चाय की दूकान के नीचे साफ-सुथरा कमरा, मृत्यु का पासपोर्ट पाये बानो-जैसे अभागे मरीजों के लिए सदा बाँह फैलाये खुला रहता था।

"सैनेटोरियम छोड़कर हम कल दूसरी जगह चलेंगे, बानो। यहाँ साली तबीयत बोर हो गयी है।" बड़े उत्साह और आनन्द से कप्तान ने भूमिका बाँधी, पर बानो का चेहरा फक पड़ गया। वह समझ गयी कि आज उसे भी नोटिस दे दिया गया है।

बड़ी रात तक कप्तान उसके गालों के पास अपना चेहरा ले जाकर गुनगुनाता रहा, "बानो, मेरी बन्नी, बन्नू!" और फिर जब बानो को नींद आ गयी तो वह भी अपने पलँग पर जाकर सो गया।

सुबह उठा तो बानो पलँग पर नहीं थी। सोचा, घिसटती बाथरूम तक चली गयी होगी। जोश आने पर वह काफी दूर तक चल लेती थी। बड़ी देर तक नहीं लौटी तो वह घबराकर उठा। बानो कहीं नहीं थी। भागकर वह मरीजों के पास गया, डॉक्टर आया, नर्सें आयीं, चौकीदार आया, पर बानो कहीं नहीं थी। सैनेटोरियम में आज पहली बार ऐसी अनहोनी घटना घटी थी।

दूसरे दिन बड़ी दूर रथी घाट पर बानो की साड़ी मिली थी। मृत्यु के आने से पूर्व वह अभागी स्वयं ही भागकर मृत्यु से मिलने चली गयी थी।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि बानो ने डूबकर आत्महत्या कर ली थी। शोक से पागल होकर कप्तान उसकी साड़ी को छाती से चिपटाए फिरता रहा; किन्तु मर्द की जवानी जाड़े की भयंकर लम्बी रात के समान है, जो काटे नहीं कटती। एक ही साल में उसका फिर विवाह हुआ, अब के ताऊ और पिता ने खूब ठोंक-पीटकर बहू छाँटी। ऊँची-अगली, गोरी और एम० ए० पास। कप्तान की नयी पत्नी के पिता थे मेजर जनरल। चालीस तमगे लगाकर उन्होंने कन्यादान किया तो कप्तान बेचारा सहम कर रह गया। प्रभा इकलौती लड़की थी फिर दुजू की बीवी थी, जो बादशाह की घोड़ी से कम नहीं होती। उसके सौ-सौ नखरे उठाता कप्तान हँसना, खिलखिलाना और मौज-मस्तियाँ सब भूलकर रह गया।

चार साल में कप्तान को दो बेटे और एक बेटी देकर प्रभा ने धन-संचय की ओर ध्यान लगाया। सोलह सालों में कप्तान के बैंक-बैलेंस में रुपयों और नोटों की मोटी तह जमाकर दोनों नैनीताल घूमने आये। कप्तान की थोड़ी-सी तोंद निकल आयी थी, चेहरा अभी भी मस्ताना था, पर मूँछों में अब वह ऐंठ नहीं रह गयी थी, कनपटी के आस-पास बाल सफेद हो चले थे। दो जवान लड़कों को कमीशन मिल गया था, बेटी मिरांडा हाउस में पढ़ रही थी।

नैनीताल आकर कप्तान के दिल में एक टीस-सी उठी। काठगोदाम से चलकर गोठिया दिखा और वह गुमसुम-सा हो गया।

नैनीताल के ग्राण्ड होटल में दोनों टिके। प्रभा बोली, "चलो डार्लिंग, पहाड़ का इंटीरियर घूमा जाय। भुवाली चलें।" चिकन, सैंडविच, रोस्ट मुर्ग पैक करवा कर उसने अपनी फियट गाड़ी भुवाली की ओर छोड़ी। बगल में दामी चंदेरी साड़ी और बिना बाँहों के ब्लाउज से अपने माँसल शरीर की गोरी दमक बिखेरती प्रभा बैठी। भुवाली की एक छोटी-सी दूकान देखकर प्रभा ने गाड़ी रुकवा दी, "इसी दूकान में आज एकदम पहाड़ी स्टाइल से कलई के गिलास में चाय पियेंगे हनी।' वह बोली।

कप्तान अब मेजर था, "मेजर की डिग्निटी कहाँ जाएगी?" वह बोला।

"भाड़ में!" कहकर प्रभा अपनी पेंसिल हील की जूतियाँ चटकाती दूकान में घुस गयी।

काठ की एक बेंच धुएँ और कालिख से काली पड़ गयी थी, उसी को झाड़कर दोनों बैठ गये। पहले कुछ देर को पहाड़ी दूकानदार भौंचक्क-सा रह गया। लकड़ी के धुएँ से एकदम काली केटली में चाय उबल रही थी।

"खूब गर्म दो गिलास चाय लाओ, प्रधान।" मेजर ने पहाड़ी में कहा और दूकानदार का मुँह खुला ही रह गया। ऐसी अंग्रेजी में बोलने वाला अनोखा जोड़ा पहाड़ी कैसे हो गया, वह सोचने लगा।

वह चाय बना ही रहा था कि अलख-अलख करते वैष्णवियों के दल ने भीतर घुसकर दूकान घेर ली, "ओ हो गुरु, भल द्दा भल द्दा भल द्दा।" कहकर वैष्णवियों के हेड ने बड़े प्रभुत्वपूर्ण स्वर में सोलह गिलास चाय का आर्डर दे दिया। हेड वैष्णवी बड़ी ही मुखर और मर्दानी थी, इसी से शायद मर्दाने स्वर में बोल भी रही थी, "सोचा, बामण ज्यू की ही दूकान की चाय छोरियों को पिलाऊँगी, आज एकादशी है।"

"क्यों नहीं! क्यों नहीं!" दूकानदार बोला, "अरे लाटी भी आयी है?"

"अरे कहाँ जाएगी अभागी?" वैष्णवी ने कहा। प्रभा और मेजर की दृष्टि एक साथ ही लाटी पर पड़ी।

कुत्सित बूढ़ी अधेड़ वैष्णवियों के बीच देवांगना-सी सुन्दरी लाटी अपनी दाड़िम-सी दंतपंक्ति दिखाकर हँस दी। मेजर का शरीर सुन्न पड़ गया, स्वस्थ होकर जैसे साक्षात् बानो ही बैठी थी। गालों पर स्वास्थ्य की लालिमा थी, कान तक फैली आँखों में वही तरल स्निग्धता थी और गूँगी जिह्वा पर गूँगापन चेहरे पर फैलकर उसे और भी भोला बना रहा था।

"हाय, क्या यह गूँगी है? माई गॉड, ह्वाट ब्यूटी।" प्रभा बोली।

"हाँ सरकार, यह लाटी है।" दूकानदार ने कहा और मेजर के दिल पर आ गिरी भारी पत्थर की चट्टान उठ गयी।

"क्या नाम है जी इसका?" प्रभा मुग्ध लाटी को ही देख रही थी।

"नाम जो होगा, वह तो बह गया मीमशाब, अब तो लाटी ही इसका नाम है।"

हेड वैष्णवी ने कहा, "हमारे गुरु महाराज को इसकी देह नदी में तैरती मिली। जीभड़ी इसकी कटकर कहीं गिर गयी थी। राम जाने कौन था वह! गले में चरयो (मंगल-सूत्र) था, ब्याह हो गया होगा। फिर हमारा गुरु महाराज इसको गुरुमंतर दिया। भयंकर 'छे रोग' था। एक-एक सेर खून उगलता था, पर गुरु की शरण में आया तो सब रोग-सोग ठीक हो गया इसका। लाटी, जीभ दिखा।"

धुँ-धुँ कर लाटी ने भुवनमोहिनी हँसी हँस दी, जीभ नहीं दिखायी।

"कुछ नहीं समझती साली। बस खाती है ढाई सेर, सब भूल गया, हमारा आर्डर भी नहीं मानता।" असंतुष्ट स्वर में मर्दानी वैष्णवी बोली।

"ओह, माई गॉड! अपने आदमी को भी भूल गयी क्या?" प्रभा बोली।

"जो था सो था, इसको कुछ याद नहीं। खाली 'फिक-फिक' कर हँसती है।"

हरामी। अब परभू इसका मालिक और परभू इसका सहारा है। हाँ, "गुरु कितना पैसा हुआ?"

हेड वैष्णवी ने पैसे चुकाए और उसका दल अलख बजाता उठ खड़ा हुआ। लाटी बैठी ही रही, मेजर एकटक उसे देख रहा था। यह वही बानो थी, जिसे डॉक्टर दलाल और कक्कड़ जैसे प्रसिद्ध विशेषज्ञों की मृत्युंजय ओषधियाँ भी स्वस्थ नहीं कर सकी थीं।

"उठ साली लाटी!" हेड वैष्णवी ने हल्की-सी ठोकर से लाटी को उठाया। एक बार फिर अपनी मधुर हँसी से मेजर का हृदय बींधकर लाटी उठी और दल के पीछे-पीछे चल दी। काश, उसके भोले चेहरे से गाल सटाकर मेजर कह सकता, "मेरी बानो, बन्नी, बन्नू!" शायद उसकी गूँगी जबान के नीचे दबी उसकी गूँगी पिछली जिन्दगी बोल उठती।

पर मेजर, जिन्दगी की दौड़ में बहुत आगे निकल आया था, पीछे लौटकर बिछुड़े को लाना सबसे बड़ी मूर्खता होती। दो जवान बेटे और बेटी, राष्ट्रपति के सहभोजों में चमकती उसकी शानदार दूसरी बीवी, गरीब, गूँगी लाटी का आना कैसे सह सके?

"उठो डार्लिंग, लंच गर्म पानी में करेंगे।" प्रभा ने कहा और मेजर उठ खड़ा हुआ। कुछ ही पलों में वह बूढ़ा और खोखला हो गया था।

बानो मर गयी थी। अब तो वह लाटी थी। परभू अब उसका मालिक और परभू ही उसका सहारा था।

अभ्यास प्रश्न

1. कथानक की दृष्टि से 'लाटी' कहानी की समीक्षा कीजिए। **[2019 CL]**
2. वातावरण चित्रण की दृष्टि से 'लाटी' कहानी की लेखिका ने कहाँ तक सफलता पायी है? सोदाहरण उत्तर दीजिए।
3. 'लाटी' कहानी की कथावस्तु का विवेचन कीजिए। **[2017 MA, 19 CM]**
4. सिद्ध कीजिए कि "'लाटी' एक घटना-प्रधान कहानी है।" कथा का अन्त आप पर क्या प्रभाव छोड़ जाता है?
5. कथानक के आधार पर 'लाटी' कहानी की समीक्षा कीजिए।
6. "शिवानी की यह कहानी आदि से अन्त तक नाटकीयता से युक्त है।" इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?
7. 'लाटी' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए। **[2020 ZF, ZD]**

अथवा 'लाटी' के प्रमुख पात्र की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

8. 'लाटी' कहानी की भाषा-शैली की विशेषताओं को लिखिए।
9. कहानी-कला की दृष्टि से 'लाटी' कहानी की समीक्षा कीजिए।
10. 'लाटी' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। **[2016 SC, 17 MG, 20 ZL]**
11. 'लाटी' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। **[2020 ZH, ZJ, ZK, ZL, ZN]**
12. कहानी-तत्त्वों के आधार पर 'लाटी' कहानी की विशेषताएँ लिखिए।
13. 'लाटी' कहानी की नायिका का चित्रांकन कीजिए।
14. 'लाटी' कहानी की कथावस्तु का उल्लेख करते हुए उसके नामकरण की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।
15. 'लाटी' कहानी की कथावस्तु पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

अथवा 'लाटी' कहानी की कथावस्तु लिखिए।

16. 'लाटी' कहानी के वैशिष्ट्य की विवेचना कीजिए।
17. कहानी के तत्वों के आधार पर 'लाटी' कहानी की समीक्षा कीजिए।